Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कोरोना महामारी का अभिभावकों पर प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, नरसिंहपुर जिले की जनपद पंचायत साईंखेड़ा के संदर्भ में

इन्द्रेश कुमार कोष्टा*

* शोधार्थी (समाजशास्त्र एवं समाजकार्य) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – कोरोना महामारी के दौरान सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा व्यवस्था अभूतपूर्व रूप से प्रभावित हुई। भारत में भी विद्यालयों के बंद होने के कारण ऑनलाइन शिक्षा को वैकल्पिक माध्यम के रूप में अपनाया गया। चूँकि महामारी के दौरान शिक्षा का माध्यम ऑनलाइन हो गया था छात्र अपने-अपने घरों से अभिभावकों के बीच रहते हुए शिक्षा प्राप्त कर रहें थे। अभिभावकों ने अपने पाल्यों को प्राप्त हो रही शिक्षा के प्रभाव को अनुभव किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य अभिभावकों के दृष्टिकोण से ऑनलाइन शिक्षा के प्रभावों का अध्ययन करना है। शोध कार्य हेतु अध्ययन क्षेत्र के रुप में मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले की छः जनपद पंचायतों में से साईंखेडा जनपद पंचायत को लिया गया। अध्ययन हेतु 100 अभिभावकों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया। तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का सारणीयन एवं विश्लेषण किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश अभिभावक कृषि एवं मजदूरी आधारित निम्न-मध्यम आय वर्ग से संबंधित हैं, जिनकी आय महामारी के दौरान प्रभावित हुई। डिजिटल संसाधनों की कमी, आर्थिक दबाव, घर पर अध्ययन हेतु उपयुक्त वातावरण का अभाव, बच्चों के बढ़ते स्क्रीन टाइम, डिजिटल उपकरणों की लत, छात्रों की दिनचर्या में परिवर्तन तथा ऑनलाइन शिक्षा से असंतुष्टि प्रमुख समस्याएँ रहीं। दूसरी ओर ऑनलाइन शिक्षा ने बच्चों में तकनीकी दक्षता एवं डिजिटल साक्षरता का विकास भी कियाहै। अध्ययन में अधिकांश अभिभावकों ऑफलाइन शिक्षा को प्राथमिकता दी है साथ ही उन्होंने मिश्रित (हाइब्रिड) शिक्षा प्रणाली को भविष्य के लिए अधिक उपयुक्त माना है। उन्होंने मिश्रित शिक्षा प्रणाली में ऑनलाइन शिक्षा को एक निश्चित एवं नियंत्रित वातावरण में संपन्न करने की आवश्यकता पर बल दिया है।

शब्द कुंजी – कोरोना महामारी, ऑनलाइन शिक्षा, अभिभावक दृष्टिकोण, डिजिटल संसाधन, स्क्रीन टाइम, हाइब्रिड शिक्षा।

प्रस्तावना – कोविड-19का प्रकोप सबसे पहले दिसंबर 2019 में वुहान शहर,हुबेई प्रांत, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना में रिपोर्ट किया गया था और संक्रमित रोगियों में गंभीर श्वसन विकार, सिरदर्द, थकान, गले में दर्द, हल्का बुखार और अन्य लक्षण पाए गए थे इस बीमारी को आधिकारिक तौर पर 11 फरवरी, 2020 को थ्रूज द्वारा कोरोना वायरस रोग-2019 (COVID-19) नाम दिया गया है। 11 मार्च को WHO द्वारा कोविड-19को महामारी घोषित कर दिया गया। कोविड-19 तेजी से चीन तक ही सीमितप्रतीत होने वाली एक गंभीर समस्या से लगभग रातों-रात वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल में बदल गया। चूकिं यह एक संक्रामक रोग था कुछ देशों में कमज़ोर स्वास्थ्य सुविधाओं और संसाधनों की कमी के कारण, कोविड-19 महामारी के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए कठोर नीतियाँ आवश्यक थीं। कोरोनावायरस के प्रसार से लड़ने के दौरान लोगों की जान बचाने के लिए संबंधित अधिकारियों द्वारा शारीरिक दूरी और लॉकडाउन संबंधी नीतिगत उपायों का समर्थन किया गया, कोरोना महामारी ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया, जिसमें शिक्षा क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक रहा है। महामारी के कारण विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों को बंद करना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने हेतु ऑनलाइन शिक्षा को अपनाया गया। ऑनलाइन शिक्षा ने एक ओर शिक्षा की निरंतरता को बनाए रखने का कार्य किया, वहीं दूसरी ओर अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न की है।

भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ बड़ी संख्या में परिवार निम्न एवं मध्यम आय वर्ग से संबंधित हैं, वहाँ डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता एवं तकनीकी पहुँच एक गंभीर समस्या के रूप में सामने आई। विशेष रूप से ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में औसत/निम्न इंटरनेट गुणवत्ता, स्मार्टफोन एवं डिजिटल साक्षरता की कमी ने ऑनलाइन शिक्षा की प्रभावशीलता को प्रभावित किया। चूकिं महामारी के कारण विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों को बंद करना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने हेतु ऑनलाइन शिक्षा को अपनाया गया। इसके परिणामस्वरुप सभी छात्रों ने ऑनलाइन शिक्षा अपने-अपने घरों से अभिभावकों के बीच रहते हुए प्राप्त की है। इसका व्यापक प्रभाव अभिभावकों पर भी पड़ा। सभी अभिभावकों ने अपने पाल्यों को प्राप्त होने वाली शिक्षा की गुणवत्ता, उसका छात्रों में पड़ने वाले प्रभाव, उनकी दिनचर्या में आये परिवर्तन, मनोवैज्ञानिक प्रभाव एवं ऑनलाइन शिक्षा के कारण बच्चों की पढ़ाई की निगरानी, डिजिटल संसाधनों की व्यवस्था तथा स्वयं पर पड़ने वाले आर्थिक दबाव को अनुभव किया है इसलिए अभिभावकों के अनुभवों एवं दृष्टिकोण का अध्ययन करना आवश्यक है, जिससे भविष्य की शिक्षा नीति में सुधार हेतु उपयोगी सुझाव प्राप्त हो सकें। प्रस्तुत शोध-पत्र में अभिभावकों के दृष्टिकोण से ऑनलाइन शिक्षा के सकारात्मक एवं

नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. अभिभावकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. ऑनलाइन शिक्षा हेतु डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता का अध्ययन करना।
3. ऑनलाइन शिक्षा के कारण अभिभावकों पर पड़े आर्थिक प्रभाव का विश्लेषण करना।
4. बच्चों के व्यवहार, स्क्रीन टाइम एवं दिनचर्या पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभावों का अध्ययन करना।
5. अभिभावकों के दृष्टिकोण से ऑनलाइन एवं ऑफलाइन शिक्षा की तुलना करना।
6. भविष्य की शिक्षा प्रणाली हेतु उपयुक्त माध्यम के संबंध में अभिभावकों की राय जानना।

साहित्य समीक्षा

1. जे. हुफ़मैन, और ई. सेकॉर्ड, (2021)– स्कूलों के ऑफलाइन उपस्थिति से इंटरनेट के ज़रिए ऑनलाइन उपस्थिति में बदलने के कारण परिवारों में नया दबाव आ गया है। यह स्पष्ट हुआ है कि परिवार और बच्चे स्कूलों पर पढ़ाई के साथ अन्य चीज़ों जैसे- खाना, हेल्थ केयर, रहने की जगह और सामाजिक कल्याण के लिए स्कूलों पर आश्रित थे। कई परिवारों का कहना है कि महामारी के तनाव की वजह से बच्चों की डाइट खराब हो गई है और वे मीठा और तला हुआ खाना ज़्यादा खाने लगे हैं। घर पर रहने के आदेश और ऑनलाइन पढ़ाई की वजह से व्यायाम के मौके कम हो गए हैं।कोविड-19 के दौरान सोशल मीडिया के बढ़ते इस्तेमाल, साथ ही शिक्षा के पारंपरिक तरीकों के डिजिटल प्लेटफॉर्म पर जाने से, ज़्यादातर किशोर स्क्रीन के सामने काफी ज़्यादा समय बिता रहे हैं। ज़्यादा स्क्रीन टाइम खराब नींद, सुस्त आदतें, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं और शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं से जुड़ा है।

2. एस. महेंद्र देव और राजेश्वरी सेनगुप्ता(2020)–भारत में लगभग 90प्रतिशत कामकाजी आबादी अनौपचारिक क्षेत्र में काम करती है जो देश की कुल जीडीपी में 45 प्रतिशत से ज़्यादा का योगदान देती है।नोटबंदी एवं गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स से संघर्ष कर रहा अनौपचारिक क्षेत्र कोविड-19 के प्रकोप के कारण असमान रूप से प्रभावित हुआ है।शहरी इलाकों में रहने वाले मज़दूरों की लॉकडाउन की वजह से बड़े पैमाने पर नौकरियां और इनकम खत्म हो गई हैं। अप्रैल 2020 में 122 मिलियन नौकरियां खत्म हो गईं। इनमें से छोटे व्यापारियों और दिहाड़ी मज़दूरों की 91 मिलियन नौकरियां चली गईं (सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी(CMIE))।अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के एक सर्वे से पता चलता है कि लॉकडाउन के दौरान 57 प्रतिशत ग्रामीण मज़दूरों और 80 प्रतिशत शहरी मज़दूरों की नौकरी चली गई।

शोध पद्धति–यह अध्ययन अन्वेषणात्मक शोध पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत शोध पत्र हेतु अध्ययन क्षेत्र मध्यप्रदेश राज्य के नरसिंहपुर जिले की छ: जनपद पंचायतों में से एक जनपद पंचायत साईंखेड़ा को चुना गया जिसके अंतर्गत ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में आने वाली उच्चतर माध्यमिक शालाओं में अध्ययन करने वाले छात्रों के अभिभावकों को लिया गया है।

निदर्शन– अध्ययन हेतु अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में स्थित उच्चतर माध्यमिक शालाओं में अध्ययन करने वाले छात्रों के अभिभावकों में से 100 अभिभावकों का उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा चयन किया गया।शाला के शिक्षकों के माध्यम से छात्रों के अभिभावकों से संपर्क कर साक्षात्कार अनुसूची के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए गये।

तथ्य संकलन के उपकरण– चूंकि अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र दोनों है।ऑनलाइन शिक्षा का अपने पाल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों के सम्बन्ध में अभिभावकों के अनुभव को जानने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया।

तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण– साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राप्त उत्तरों का तथ्यों के रूप में वर्गीकरण, सारणीयन कर उनका विश्लेषण किया गया। साक्षात्कार अनुसूची में पूछे गए प्रश्नों एवं अभिभावकों से प्राप्त उत्तरों वर्गीकरण है-

तालिका 1 – (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

परिणाम एवं विश्लेषण

सामाजिक-आर्थिक स्थिति–अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 40 प्रतिशत अभिभावक कृषि एवं 36 प्रतिशत मजदूरी से जुड़े हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मुख्यत: कृषि एवं श्रम आधारित है। अधिकांश अभिभावक निम्न एवं निम्न-मध्यम आय वर्ग से संबंधित पाए गए। लगभग 64 प्रतिशत अभिभावकों की वार्षिक आय 100000 से 300000 रुपये के बीच थी। यह स्थिति दर्शाती है कि महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा हेतु आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था करना इन परिवारों के लिए चुनौतीपूर्ण रहा होगा।

महामारी का आर्थिक प्रभाव–लगभग 74 प्रतिशत अभिभावकों ने स्वीकार किया कि कोरोना महामारी के दौरान उनकी आय प्रभावित हुई। महामारी के कारण रोजगार एवं आय के स्रोत सीमित हुए, जिससे परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर हुई। इसके अतिरिक्त 78 प्रतिशत अभिभावकों को बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई हेतु डिजिटल संसाधन खरीदने पड़े। इससे यह स्पष्ट होता है कि महामारी ने शिक्षा को आर्थिक बोझ में परिवर्तित कर दिया।

डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता–अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 62 प्रतिशत अभिभावकों के पास प्रारंभ में ऑनलाइन शिक्षा हेतु आवश्यक डिजिटल संसाधन उपलब्ध नहीं थे। परिणामस्वरूप अधिकांश परिवारों को स्मार्टफोन, इंटरनेट एवं अन्य उपकरण खरीदने पड़े। डिजिटल संसाधनों में स्मार्टफोन का उपयोग सर्वाधिक (86 प्रतिशत) पाया गया। इसका मुख्य कारण इसकी कम लागत, बहुउपयोग एवं आसान उपलब्धता है। लैपटॉप एवं कंप्यूटर का उपयोग अत्यंत सीमित रहा। यह परिणाम भारत में डिजिटल विभाजन की वास्तविकता को स्पष्ट करता है।

ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की संतुष्टि–लगभग 68 प्रतिशत अभिभावक ऑनलाइन शिक्षा से असंतुष्ट पाए गए। असंतोष के प्रमुख कारण निम्न थे-इंटरनेट एवं नेटवर्क समस्या, बच्चों का ध्यान भटकना, प्रत्यक्ष शिक्षण का अभाव, सीमित शिक्षक-विद्यार्थी संवाद, डिजिटल उपकरणों की कमी, अनुशासन एवं निगरानी की समस्या आदि। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि अधिकांश अभिभावकों की दृष्टि में पारंपरिक ऑफलाइन शिक्षा अधिक प्रभावी एवं विश्वसनीय है।

बच्चों के व्यवहार एवं मानसिकता पर प्रभाव–अध्ययन में 82 प्रतिशत अभिभावकों ने बताया कि बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान चैटिंग, मूवी एवं कार्टून देखने जैसी गतिविधियों में संलग्न रहते थे। इसके अतिरिक्त 86 प्रतिशत अभिभावकों को बच्चों की लगातार निगरानी करनी पड़ती थी वही

84 प्रतिशत अभिभावकों ने माना कि बच्चों में मोबाइल/टैबलेट की लत विकसित हुई साथ ही 87 प्रतिशत अभिभावकों के अनुसार इस लत को छुड़ाना कठिन है। यह परिणाम स्पष्ट करता है कि ऑनलाइन शिक्षा ने बच्चों के व्यवहार एवं मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाला।

बच्चों की दिनचर्या एवं स्क्रीन टाइम पर प्रभाव–लगभग 83 प्रतिशत अभिभावकों ने माना कि बच्चों की दिनचर्या में परिवर्तन आया। अधिकांश अभिभावकों ने इस परिवर्तन को नकारात्मक माना। स्क्रीन टाइम में वृद्धि भी एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष के रूप में सामने आई। 86 प्रतिशत अभिभावकों के अनुसार बच्चों का स्क्रीन टाइम बढ़ा, जिसमें अधिकांश बच्चों का स्क्रीन टाइम 2–3 घंटे तक बढ़ गया। अत्यधिक स्क्रीन टाइम बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है।

ऑनलाइन शिक्षा के सकारात्मक प्रभाव–यद्यपि ऑनलाइन शिक्षा से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुईं, फिर भी इसके कुछ सकारात्मक परिणाम भी सामने आए। लगभग 83 प्रतिशत अभिभावकों का मानना था कि बच्चों में तकनीकी दक्षता बढ़ी। बच्चों ने मोबाइल एवं लैपटॉप संचालन, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग, डिजिटल सामग्री डाउनलोड/अपलोड करना, ऑनलाइन संचार कौशल आदि कौशल विकसित किए है। इससे बच्चों की डिजिटल साक्षरता में वृद्धि हुई है।

शिक्षा के उपयुक्त माध्यम के संबंध में अभिभावकों की राय–अध्ययन में कोई भी अभिभावक केवल ऑनलाइन शिक्षा को उपयुक्त नहीं मानता। 64 प्रतिशत अभिभावकों ने मिश्रित (ऑनलाइन + ऑफलाइन) शिक्षा प्रणाली को बेहतर माना है। लेकिन इन अभिभावकों ने एक नियंत्रित एवं निश्चित वातावरण में ही ऑनलाइन शिक्षा देना स्वीकार किया है अर्थात स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से शाला कक्ष में एवं शिक्षक के नियंत्रण में ऑनलाइन शिक्षा देने को स्वीकार किया है। वही 36 प्रतिशत अभिभावकों ने ऑफलाइन शिक्षा को प्राथमिकता दी है। यह स्पष्ट करता है कि भविष्य की शिक्षा प्रणाली में डिजिटल तकनीक एवं पारंपरिक शिक्षण का संतुलित समन्वय आवश्यक है।

निष्कर्ष–प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कोरोना महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा एक आवश्यक विकल्प के रूप में उभरी, जिसने शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तथापि, इसके साथ अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ भी सामने आईं।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश अभिभावक निम्न एवं मध्यम आय वर्ग से संबंधित थे, जिनकी आर्थिक स्थिति महामारी के दौरान प्रभावित हुई। डिजिटल संसाधनों की कमी एवं बढ़ते खर्च ने परिवारों पर अतिरिक्त आर्थिक दबाव डाला। बच्चों में स्क्रीन टाइम, मोबाइल की लत एवं एकाग्रता की समस्या, घर पर पढ़ाई हेतु उपयुक्त वातावरण का अभाव जैसी चुनौतियाँ भी बढ़ीं। दूसरी ओर ऑनलाइन शिक्षा ने बच्चों में तकनीकी दक्षता एवं डिजिटल साक्षरता का विकास किया।

अत: यह कहा जा सकता है कि भविष्य की शिक्षा व्यवस्था में केवल ऑनलाइन या केवल ऑफलाइन प्रणाली पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि दोनों के संतुलित समन्वय पर आधारित हाइब्रिड (मिश्रित) शिक्षा प्रणाली अधिक प्रभावी एवं व्यवहारिक सिद्ध होगी।

सुझाव:

1. ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट एवं डिजिटल अवसंरचना का विस्तार किया जाए ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता इंटरनेट की व्यवस्था की जाए।
2. आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के किसी एक सदस्य को डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराए जाएँ।
3. अधिकांश परिवारों में पढ़ाई के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध नहीं है अत: छात्रों को शाला में ही शिक्षक की निगरानी में ऑनलाइन पढाई करने की सुविधा दी जाए।
4. समस्त शालाओं में खास तौर पर ग्रामीण शालाओं में विद्युत की आपूर्ति हेतु सौलर पैनल लगाये जाए।
5. ऑनलाइन शिक्षा हेतु कक्षाओं में स्मार्ट बोर्ड लगाये जाये एवं शिक्षक की निगरानी में ऑनलाइन पढ़ाई कराई जाए।
6. ऑनलाइन शिक्षा हेतु शिक्षकों को प्रतिवर्ष प्रशिक्षण दिया जाए।
7. सप्ताह में प्रत्येक विषय की कम से कम एक कक्षा ऑनलाइन (स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से) कराई जाए।
8. बच्चों के स्क्रीन टाइम को नियंत्रित करने हेतु दिशानिर्देश बनाए जाएँ।
9. ऑनलाइन एवं ऑफलाइन शिक्षा के संतुलित उपयोग पर आधारित हाइब्रिड मॉडल विकसित किया जाए।
10. विद्यालयों में डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Mahendra Dev, S. and Sengupta, Rajeswari -Covid-19: Impact on the Indian Economy http://www.igidr.ac.in/pdf/publication/WP-2020-013.pdf
2. Hoofman, J., & Secord, E. (2021). The effect of COVID-19 on education. *Pediatric Clinics of North America*, *68*(5), 1071.
3. Aggarwal, J. C. (2010). *Educational Research*. New Delhi: Arya Book Depot.
4. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2016). *Research in Education*. Pearson Education.
5. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.
6. UNESCO. (2020). *Education in a Post-COVID World*. Paris: UNESCO Publications.
7. UNICEF. (2021). *The State of the World's Children Report*.
8. Mishra, L., Gupta, T., & Shree, A. (2020). Online teaching-learning in higher education during lockdown period of COVID-19 pandemic. *International Journal of Educational Research Open*, 1, 100012.
9. Dhawan, S. (2020). Online Learning: A Panacea in the Time of COVID-19 Crisis. *Journal of Educational Technology Systems*, 49(1), 5–22.
10. Singh, A. & Sharma, R. (2021). Impact of Online Education on Students during COVID-19 Pandemic. *Indian Journal of Education and Research*, 12(2), 45–58.
11. शर्मा प्रकाश(2004) : 'रिसर्च मैथोडोलोजी' पंचशील प्रकाशन , जयपुर,
12. आहूजा.राम:'सामाजिक अनुसंधान' रावत पब्लिकेशन, जयपुर
13. https://narsinghpur.nic.in
14. https://udiseplus.gov.in
15. https://cepr.org/about/people/hans-henrik-sievertsen

तालिका 1

क्र.	प्रश्न विकल्प	प्रश्न विकल्प / उत्तरदाता संख्या			
1	उत्तरदाताओं का आर्थिक विवरण(रुपयों में)	1-2 लाख/ 24	2-3 लाख/ 34	3-4 लाख/ 30	4-5 लाख से अधिक /12
2	उत्तरदाताओं का निवास संबंधी विवरण	ग्रामीण / 48		नगरीय / 52	
3	कोरोना महामारी का अभिभावकों की आय पर प्रभाव	हां / 74		नहीं / 26	
4	बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई हेतु अभिभावकों के पास उपलब्ध डिजिटल संसाधन संबंधी विवरण	हां / 38		नहीं / 62	
5	बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई हेतु अभिभावकों पर डिजिटल संसाधन क्रय करने की बाधयता संबंधी विवरण	हां / 78		नहीं / 22	
6	अभिभावकों द्वारा क्रय किए गए डिजिटल संसाधन संबंधी विवरण	स्मार्टफोन/ 86	कंप्यूटर/ 02	लेपटॉप/ 10	अन्य / 02
7	अभिभावकों का बच्चों को प्राप्त हो रही ऑनलाइन शिक्षा से संतुष्टि संबंधी विवरण	हां / 32		नहीं / 68	
8	अभिभावकों पर डिजिटल डिवाइस को रिचार्ज/मरम्मत कराने का खर्च बढ़ने संबंधी विवरण	हां / 86		नहीं / 14	
9	'ऑनलाइन शिक्षा ऑफलाइन शिक्षा से बेहतर है' अभिभावकों का दृष्टिकोण संबंधी विवरण	हां / 18		नहीं / 82	
10	अभिभावकों के अनुसार ऑनलाइन शिक्षा के दौरान बच्चों का चैट, मूवी, कार्टून आदि देखने संबंधी विवरण	हां / 82		नहीं / 18	
11	अभिभावकों द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के दौरान बच्चों की निगरानी करने संबंधी विवरण	हां / 86		नहीं / 14	
12	ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने के कारण बच्चों में मोबाइल, टेबलेट, आदि की लत पड़ने संबंधी विवरण	हां / 84		नहीं / 16	
13	'ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने के कारण बच्चों में मोबाइल, टेबलेट, आदि की लत को छुड़ाने मुश्किल है' संबंधी विवरण	हां / 87		नहीं / 13	
14	'ऑनलाइन शिक्षा के कारण बच्चे तकनीकि (डिवाइस संचालन) में कुशल हुए है' संबंधी विवरण	हां / 83		नहीं / 17	
15	ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने के कारण बच्चों की दिनचर्या में परिवर्तन आने संबंधी विवरण	हां / 83		नहीं / 17	
16	'ऑनलाइन शिक्षा के कारण बच्चों की दिनचर्या में आये परिवर्तन का प्रभाव कितना एवं कैसा रहा' संबंधी विवरण	थोड़ा / 34	बहुत / 49	अच्छा / 19	बुरा / 64
17	ऑनलाइन शिक्षा के कारण बच्चों के स्क्रीन टाइम में वृद्धि होने संबंधी विवरण	हां / 86		नहीं / 14	
18	'बच्चों के समग्र विकास के लिए अभिभावक किस शिक्षा माध्यम को अच्छा मानने' संबंधी विवरण	ऑनलाइन / 00	ऑफलाइन / 36	दोनों (मिश्रित) / 63	
19	सामान्य स्थिति में अभिभावक अपने बच्चों को किस माध्यम से पढ़ाना चाहते है संबंधी विवरण	ऑनलाइन / 00	ऑफलाइन / 37	दोनों (मिश्रित) / 63	

****